© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 03 | January – March 2018

भारत में भूगोल का विकास और प्रकृति: एक अध्ययन

Gayatri, email : gayatri.jind@gmail.com

सार:

भारत का भूगोल या भारत का भौगोलिक स्वरूप से आशय भारत में भौगोलिक तत्वों के वितरण और इसके प्रतिरूप से है जो लगभग हर दृष्टि से काफ़ी विविधतापूर्ण है। दक्षिण एशिया के तीन प्रायद्वीपों में से मध्यवर्ती प्रायद्वीप पर स्थित यह देश अपने 3287,263 वर्ग किमी क्षेत्रफल के साथ विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है। साथ ही लगभग 1.3 अरब जनसंख्या के साथ यह पूरे विश्व में चीन के बाद दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश भी है। भारत की भौगोलिक संरचना में लगभग सभी प्रकार के स्थलरूप पाए जाते हैं। एक ओर इसके उत्तर में विशाल हिमालय की पर्वतमालायें हैं तो दूसरी ओर और दक्षिण में विस्तृत हिंद महासागर, एक ओर ऊँचा-नीचा और कटा-फटा दक्कन का पठार है तो वहीं विशाल और समतल सिन्धु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान भी, थार के विस्तृत मरुस्थल में जहाँ विविध मरुस्थलीय स्थलरुप पाए जाते हैं तो दूसरी ओर समुद्र तटीय भाग भी हैं। कर्क रेखा इसके लगभग बीच से गुजरती है और यहाँ लगभग हर प्रकार की जलवायु भी पायी जाती है। मिट्टी, वनस्पति और प्राकृतिक संसाधनो की दृष्टि से भी भारत में काफ़ी भौगोलिक विविधता है। प्राकृतिक विविधता ने यहाँ की नृजातीय विविधता और जनसंख्या के असमान वितरण के साथ मिलकर इसे आर्थिक, सामजिक और सांस्कृतिक विविधता प्रदान की है। इन सबके बावजूद यहाँ की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक एकता इसे एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित करती है। हिमालय द्वारा उत्तर में सुरक्षित और लगभग 7 हज़ार किलोमीटर लम्बी समुद्री सीमा के साथ हिन्द महासागर के उत्तरी शीर्ष पर स्थित भारत का भू-राजनैतिक महत्व भी बहुत बढ़ जाता है और इसे एक प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

मुख्य शब्द: भौगोलिक विविधता, भू-राजनैतिक, जनसंख्या, भारत का भूगोल आदि।

परिचय:

हमारे देश में भूगोल विषय में उच्च शिक्षा का विकास काफी विलम्ब से हुआ, सम्भवत: इसका कारण ब्रिटिश भारत में स्वतन्त्र चिन्तन का अभाव रहा यहाँ पर फ्रांस, जर्मनी या अमेरिका की भांति भारतीय विद्वानों ने प्रारम्भ में अपने विचारों को स्वयं की दार्शनिक विचारधारा के रूप में नहीं रखा, बल्कि उन्होंने जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन में विकसित विचारधारा को आधार मानकर अध्ययन किया ।

वर्तमान में भी भारतीय विद्वान विदेशी विद्वानों के विचारों प्रतिपादित तकनीकों व विधियों का अनुसरण करते हैं । वह अभी भी अपनी विचारधारा को भारतीय व प्रादेशिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विकसित नहीं कर पाए हैं ।

ब्रिटिश शासन काल में भूगोल का अध्यापन एवं अध्ययन सीनियर केम्ब्रिज अथवा इण्टरमीडिएट स्तर पर प्रारम्भ किया गया था, ऐसा 19वीं शताब्दी तक रहा, जबकि भूगोल को विभिन्न देशों व स्थानों की स्थिति विस्तार, क्षेत्रफल, भौतिक स्वरूप जलवायु, कृषि फसलों तथा व्यापार को बताने वाला विषय माना जाता था। ब्रिटिश भूगोलवेताओं विशेषत: डडले स्टाम्प, ने भारत में भूगोल की दिशा व प्रतिरूप को प्रभावित किया। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में देश में विश्वविद्यालय स्तर पर भूगोल का विकास ब्रिटिश शासकों के निर्देशन में शुरू हो सका।

यद्यपि इससे पूर्व ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सर्वेक्षण विभाग, भारतीय मौसम विभाग की स्थापना कर दी थी, जिन्होंने भारत व समीपवर्ती देशों के भौगोलिक मानचित्रों एवं दैनिक मौसम मानचित्रों को तैयार करने का कार्य प्रारम्भ करके देश में भूगोल के उच्च अध्ययन की ओर लोगों को आकर्षित करने का कार्य किया। वास्तव में भूगोल व उससे सम्बन्धित तथ्यों का विकास 18वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ, जिसको गति प्रथम विश्व युद्ध के बाद मिली और वास्तविक रूप 1970 के बाद मिला।

इस प्रकार भूगोल के विकासक्रम को निम्न कालों (Periods) में रखा जा सकता है:

1. प्रारम्भिक ब्रिटिश काल:

अठारहवीं शताब्दी में भारत में सर्वेक्षण विभाग ने जो कार्य किए, उनमें भारत के धरातलीय भूपत्रकों को तैयार कराना था। इस विभाग के महासर्वेक्षक मेजर जेम्स रेनल ने बंगाल की एटलस प्रकाशित की।

इन्होंने 'गंगा व ब्रहमपुत्र नदियों द्वारा डेल्टा निर्णण' व 'हिन्द व अटलांटिक महासागर की धाराएँ' नामक पुस्तकों की रचना की। 19वीं शताब्दी में भूगोल का अध्ययन विद्यालय स्तर तक सीमित रहा। इस स्तर को सीनियर केम्ब्रिज का नाम दिया, जिसे आज इण्टरमीडिएट के नाम से पुकारा जाता है।

देश के नये-नये नगरों में भूगोल को अंग्रेजी माध्यम से पढाया जाने लगा। इसको इतिहास विषय से भी जोड़कर पढ़ाया जाने लगा। यह विषय एक नीरस विषय बना रहा। भारतीय विद्वानों को न तो भूगोल को विकसित करने के लिए उत्साहित किया गया, और न ही भारत में भूगोल पर लेखन कार्य को प्रोत्साहिन किया गया। ब्रिटिश शासकों ने इस शताब्दी में जो महत्वपूर्ण कार्य किए उनमें भारत की जनगणना सम्बन्धी आँकडों का प्रकाशन जिला स्तर पर गजेटियरों को तैयार करा कर उनका प्रकाशन कराना प्रमुख रूप से शामिल है।

2. स्वतन्त्रता पूर्व एवं स्वतन्त्रता पश्चात प्रारम्भिक भारतीय काल (1920-1955):

इसे भारत में भूगोल का स्थापना काल माना जाता है, जब भूगोल ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा। इस विषय का अध्ययन-अध्यापन महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रारम्भ हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध लाहौर के एक कालेज में 1920 में भूगोल का अध्यापन प्रारम्भ हुआ।

इसके बाद 1927 में पटना, 1928 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में भूगोल का अध्यापन स्नातक स्तर पर प्रारम्भ हुआ । इसके बाद सेण्ट जान्स कालेज आगरा (1935) इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1937) में भूगोल विभाग स्थापित किए गए ।

इस अवधि गे जिन अन्य महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में भूगोल विभाग की स्थापना स्नातक स्तर पर की गई उनमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय, कलकत्ता, मैसूर, उस्मानिया, विश्वविद्यालय हैदराबाद, बनारस, हिन्दू विश्वावद्यालय, वाराणसी, उदयपुर, जोधपुर, गोहाटी, कानपुर, अमरावती, मुरादाबाद शामिल है । इन भूगोल विभागों ने भूगोल को आगे बढ़ाने में जो योगदान दिया उससे भूगोल के स्नातकोत्तर विकास को प्रोत्साहन मिलने लगा ।

भारत में भूगोल को आधार प्रदान करने में उन विद्वानों ने अहम भूमिका निभाई जिन्होंने भूगर्भशास्त्र (Geology) में शिक्षा प्राप्त की थी । उनकी प्राथमिक रूचि भौतिक भूगोल में थी अत: उन्होंने भूगोल में भौतिक भूगोल से सम्बन्धित लेखों का प्रकाशन किया, व उनके अध्ययन पर जोर दिया, इनमें एस॰पी॰ चटर्जी एच॰एल॰ छिब्बर, एन॰ सुब्रमण्यम, एस॰सी॰ चटर्जी के नाम उल्लेखनीय है, इनके साथ-साथ आर॰एन॰ दुबे व जार्ज कुरियन ने आर्थिक व संसाधन भूगोल, एस॰एम॰ अली, ताहिर रिजवी व आई॰आर॰ खान ने गणितीय भूगोल व मानचित्रण भूगोल के विकास में अपना योगदान दिया ।

3. भूगोल के विकास का भारतीय भूगोलवेत्ताओं का प्रथम काल (1956-1975):

यह भूगोल के बहुमुखी विकास का काल माना जाता है । विकास के इस काल ने देश को ऐसे भूगोलवेत्ताओं को भूगोल के क्षेत्र में स्थापित किया, जिनके भौगोलिक विचारों, लेखों, शोध पत्रों ने विषय को एक नई दिशा प्रदान की इन विचारों ने भूगोल में शोध कार्यों को बढ़ावा दिया । इस काल के विद्वानों ने विषय को विचारों की जो शृंखला प्रदान की है, वह आज भी अतुलनीय है ।

इस काल के प्रमुख भूगोलवेता आर॰एल॰ सिंह, ए॰एस॰ जौहरी, एस॰एल॰ कायस्थ (वाराणसी), पी॰दयाल, आद्या सरन (पटना), मुहम्मद शफी, अनस अहमद, रफी उल्लाह (अलीगढ़), सी॰डी॰ देशपाण्डे (मुम्बई), उजागर सिंह (गोरखपुर), आर॰पी॰ सिंह (बोध गया) इनायत अहमद (रांची), वी॰एल॰एस॰ प्रकाशा राव (दिल्ली), ए॰एन॰ भट्टाचार्य (उदयपुर), वी॰सी॰ मिश्रा (जोधपुर), एच॰एस॰ भाटिया, शाह मंजूर आलम (हैदराबाद), जी॰एस॰ गोसाल, ए॰बी॰ मुखर्जी (चण्डीगढ), वी॰एस॰ गणानाथन (पुणे), के॰ बागची, एन॰आर॰ कार, ए॰बी॰ चटर्जी (कोलकाता) श्रीमति वी॰ए॰ जानकी (बडौदरा), ए॰ आर॰ तिवारी, इन्दपाल (आगरा) माने जाते है, इनमें से अधिकांश ने विदेशों में रहकर शोध कार्य किए व शोध उपाधियाँ प्राप्त की ।

4 भूगोल के विकास का क्रांतिकारी काल 1975 के बाद आज तक:

बड़े-बड़े नगरों में भूगोल के विकसित होने के बाद इस विषय ने कस्बों व ग्रामीण केन्द्रों में कदम बढ़ाने शुरू किए । भूगोल विभागों की स्थापना उत्तर भारत के अनेक कस्बों में स्नातक स्तर पर होने लगी, तथा अनेक पूर्व स्थापित विभागों ने स्नातकोत्तर स्तर पर भूगोल को विकसित करना प्रारम्भ किया ।

अनेक विश्वविद्यालयों में विशेष रूप से इलाहाबाद, वाराणसी, दिल्ली (जामिया, जवाहर लाल नेहरू व दिल्ली विश्वविद्यालयों), अलीगढ़, सागर, जयपुर जोधपुर, उदयपुर, चंडीगढ़, पटियाला, रोहतक, कुरूक्षेत्र, पटना, रांची, भुवनेश्वर, पूणे, मुम्बई, मैसूर, हैदराबाद, धारवाड, रायपुर, इन्दौर, शिलांग, हावड़ा, श्रीनगर में भूगोल में एम०फिल पदक्रम की स्थापना की गई ।

इन सभी केन्द्रों व स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन कार्य करने वाले केन्द्रों पर पी०एच०डी० उपाधि हेतु शोध कार्यों को बढ़ावा मिलना प्रारम्भ हुआ, जिसकी वजह सं भूगोल विषय ने आज एक नया रूप ग्रहण कर लिया है। इस अवधि में भौगोलिक अनुसंधान को विशेष बढ़ावा मिला है । इन सब उपलब्धियों को इस प्रकार रखा जा सकता है ।

इस अवधि में भारतीय भूगोल की बागडोर द्वितीय पीढ़ी के भूगोलवेत्ताओं के हाथ में आ गई, जिन्होंने दिग्गज भारतीय भूगोलवेत्ताओं के निर्देशन में शोधकार्यों को बढ़ावा दिया व भूगोल विषय के विस्तार एवं गुणवत्ता में सुधार किया । भूगोल को लोकप्रियता दिलाने के लिए उसमें नए-नए विचारों का समावेश किया । भूगोल को मानव कल्याण परक विषय माना जाने लगा ।

उनकी इस विचारधारा को प्रभावित करने में विदेशी विद्वानों पीट, स्मिथ, डिकिन्सन, राइट जोन्सटन, गालैज, हार्टशोर्न का विशेष योगदान रहा है । आचारपरक, क्रांतिकारी, अपराध, चुनाव, नगर नियोजन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, नगरीय-ग्रामीण समन्वित विकास, महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक विकास में विशेष भूमिका, पर्यटन एवं यात्रा प्रबन्धन, जैसे विषयों को भूगोल के अध्ययन का अंग माना जाने लगा ।

भूगोल की प्रकृति:

यह लगभग सर्वमान्य है कि भूगोल एक विज्ञान है जिसका संबंध प्राकृतिक विज्ञानों और समाजिक विज्ञानों दोनों से हैं।

(1) **भूगोल भूतल का अध्ययन है:** भूगोल ज्ञान की एक विशिष्ट विधा है जो पृथ्वी के तल की विशेषताओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है। स्थान या क्षेत्र भूगोल की आत्मा है जिसके संदर्भ में ही कोई भौगोलिक अध्ययन किया जाता है। भूतल या पृथ्वी के तल के वैज्ञानिक अध्ययन पर भूगोल का एकाधिकार है।

(2) **भूगोल अंतर्सम्बन्धों का अध्ययन है:** भूगोल संपूर्ण पृथ्वी तल या उसके विभिन्न भागों में विद्यमान विभिन्न प्राकृतिक तथा मानवीय तत्वों के मध्य पाये जाने पारस्परिक संबंधों की व्याख्या करता है। आधुनिक भूगोल केवल भूविस्तारीय विज्ञान ही नहीं बल्कि अंतर्संबंधों का विज्ञान बन गया है। संसार के सभी भौगोलिक तत्व चाहे वे भौतिक हों या मानवीय, जड़ हों या चेतन एक-दूसरे से किसी न किसी रूप में संबंधित हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। मनुष्य प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनों प्रकार के पर्यावरणीय तत्वों से घनिष्ट रूप से संबंधित होता हैं। मनुष्य एक प्रमुख भौगोलिक कारक है जो

पर्यावरणीय तत्वों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता किन्तु वह अपने कौशल और विवेक से अपनी आवश्यकता एवं अभिरूचि के अनुसार उनमें परिवर्तन भी करता है जिससे सांस्कृतिक भूदृश्य का निर्माण होता है। इस प्रकार मनुष्य और प्रकृति की पारस्परिक अंतर्क्रिया के परिणामस्वरूप नये-नये सांस्कृतिक तत्व उत्पन्न होते हैं जिनकी व्याख्या करना भूगोल का परम उद्देश्य है।

(3) **भूगोल एक अंतर्विषयी विज्ञान है:** भौगोलिक अध्ययन में क्रमबद्ध विधि और प्रादेशिक विधि अपनायी जाती है जबकि दोनों विधियों एक-दूसरे से सन्नहित हैं। स्थानिक वितरण का विश्लेषण करते हुए भूगोल अनेक प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों से सहायता प्राप्त करना है और अन्य विज्ञान भी क्षेत्र संबंधी आवश्यक सामग्री तथा संकल्पनाओं को भूगोल से प्राप्त करते हैं। इस प्रकार भूगोल विभिन्न विज्ञानों को परस्पर सम्बद्ध करने में एक संयोजक का कार्य करता है।

(4) **भूगोल एक अनुप्रयुक्त विज्ञान है:** भूगोल के अन्तर्गत किसी देश, प्रदेश क्षेत्र के प्राकृतिक, आर्थिक तथा मानवीय संसाधनों का सर्वेक्षण, पर्यवेक्षण तथा मूल्यांकन किया जाता है। किसी प्रदेश की भूमि के क्षेत्रफल, कृषि योग्य भूमि, भूगर्भिक जल, मिट्टी, जलवायु, जलशक्ति, खनिज भंडार, वन संपदा, पशु सम्पदा, औद्योगिक उत्पादन, कृषि उत्पादन, व्यापार, यातायात, जनसंख्या आदि संसाधनों का सर्वेक्षण और मूल्यांकन भूगोल में किया जाता है। इस प्रकार संसाधनों से सम्पन्न तथा विपन्न क्षेत्रों का पता लगाया जाता है। इसी प्रकार विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों तथा नगरीय केन्द्रों की सामाजिक-आर्थिक समस्याओ का भी पता लगाया जाता है और विद्यमान संसाधन, तकनीक, आवश्यकता आदि को ध्यान में रखते हुए विकास की योजनाएं बनायी जाती हैं। इस प्रकार प्रादेशिक नियोजन में भूगोलवेत्ता महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। वर्तमान समय में भूगोलवेत्ता सैद्धान्तिक पक्षों की अपेक्षा ज्वलंत समस्याओं के निराकरण हेतु व्यावहारिक पक्षों पर अधिक ध्यान देता है। इस प्रकार भूगोल की उपयोगिता एक अनुप्रयुक्त या व्यावहारिक भूगोल के रूप में बढ़ रही है और भूगोल की मुख्य विषय-वस्तु व्यावहारिक समस्याओं के आकलन, समाकलन और निराकरण से संबन्धित हो गयी है।

निष्कर्ष:

भूगोल वह शास्त्र है जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरुप और उसके प्राकृतिक विभागों जैसे पहाड़, महादेश, देश, नगर, नदी, समुद्र, झील, डमरुमथ्य, उपत्यका, अधित्यका, वन आदि का ज्ञान होता है। प्राकृतिक विज्ञानों के निष्कर्षों के बीच कार्य-कारण संबंध स्थापित करते हुए पृथ्वीतल की विभिन्नताओं का मानवीय दृष्टिकोण से अध्ययन ही भूगोल का सार तत्व है। पृथ्वी की सतह पर जो स्थान विशेष हैं उनकी समताओं तथा विषमताओं का कारण और उनका स्पष्टीकरण भूगोल का निजी क्षेत्र है। भूगोल शब्द दो शब्दों भू यानि पृथ्वी और गोल से मिलकर बना है। भूगोल एक ओर अन्य श्रृंखलाबद्ध विज्ञानों से प्राप्त ज्ञान का उपयोग उस सीमा तक करता है जहाँ तक वह घटनाओं और विश्लेषणों की समीक्षा तथा उनके संबंधों के यथासंभव समुचित समन्वय करने में सहायक होता है। दूसरी ओर अन्य विज्ञानों से प्राप्त जिस ज्ञान का उपयोग भूगोल करता है, उसमें अनेक व्युत्पत्तिक धारणाएँ एवं निर्धारित वर्गीकरण होते हैं। यदि ये धारणाएँ और वर्गीकरण भौगोलिक उद्देश्यों के

लिये उपयोगी न हों, तो भूगोल को निजी व्युत्पत्तिक धारणाएँ तथा वर्गीकरण की प्रणाली विकसित करनी होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

[1] "India's Contribution to the World's Mineral Production". Ministry of Mines, Government of India. पहुँच तिथी 20 November 2008.

[2] "Information and Issue Briefs – Thorium". World Nuclear Association. ओरिजनल से 7 November 2006 के पुरालेखित. पहुँच तिथी 1 जून 2006.

[3] "Introduction to Inland Water Transport". Government of India. ओरिजनल से 9 July 2012 के पुरालेखित. पहुँच तिथी 19 November 2008.

[4] "Krishi World website". Krishiworld.com. ओरिजनल से 9 जून 2007 के पुरालेखित. पहुँचतिथी 18 July 2007.

[5] "National Portal of India: Know India: State of UTs". Government of India. ओरिजनल से 19 जून 2010 के पुरालेखित. पहुँच तिथी 19 November 2008.

[6] Addams et al., 2009 Addams, L., G. Boccaletti, M. Kerlin, and M. Stuchtey. 2009. Charting Our Water Future: Economic Frameworks to Inform Decision-making. World Bank.

[7] Chandrasekharam, D. "Geothermal Energy Resources of India". Indian Institute of Technology Bombay. ओरिजनल से 17 December 2008 के पुरालेखित. पहुँच तिथी 2 November2008.

[8] Elhance, Arun P. (1999). Hydropolitics in the Third World: conflict and cooperation in international river basins. US Institute of Peace Press. पप. 156–158. ISBN 978-1-878379-91-7. पहुँच तिथी 24 April 2011.